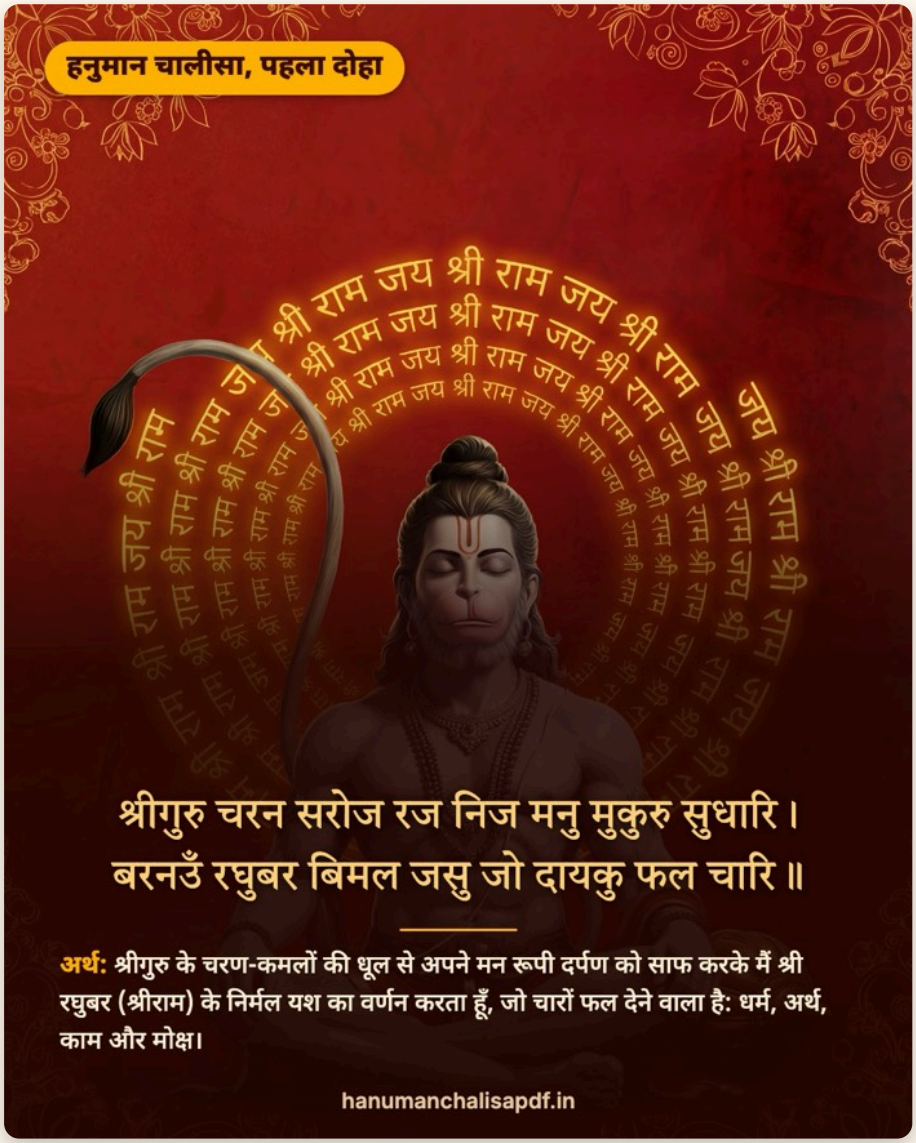
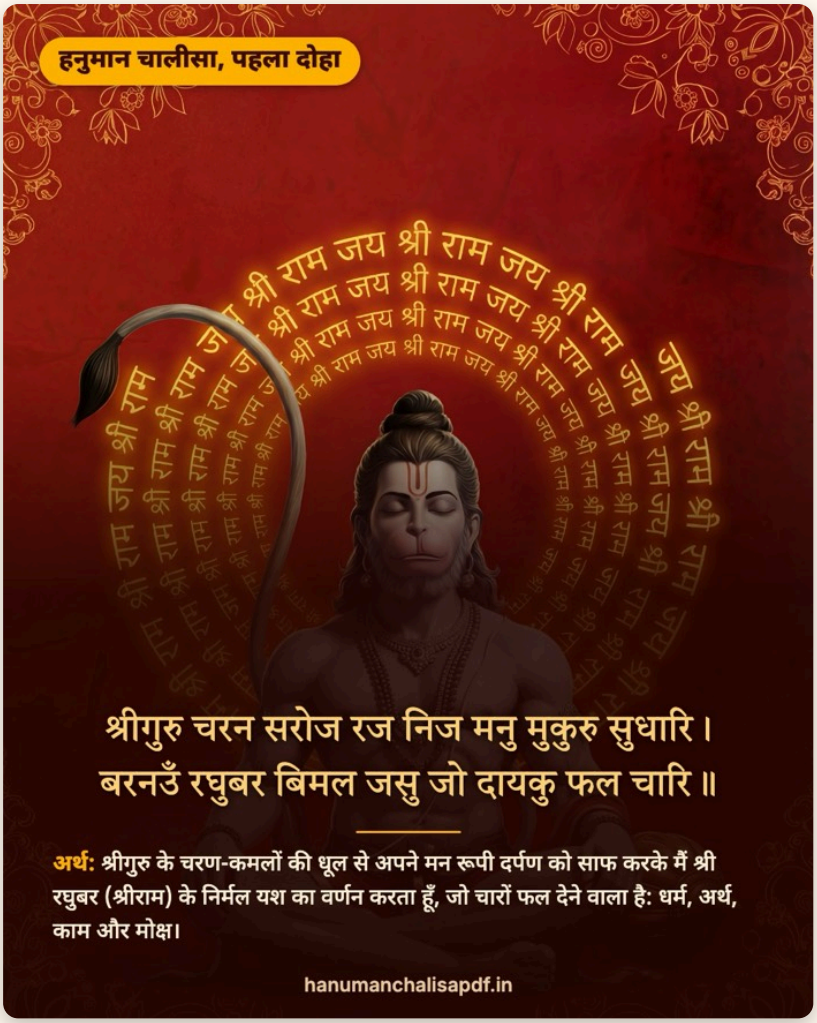
॥ श्री हनुमते नमः ॥

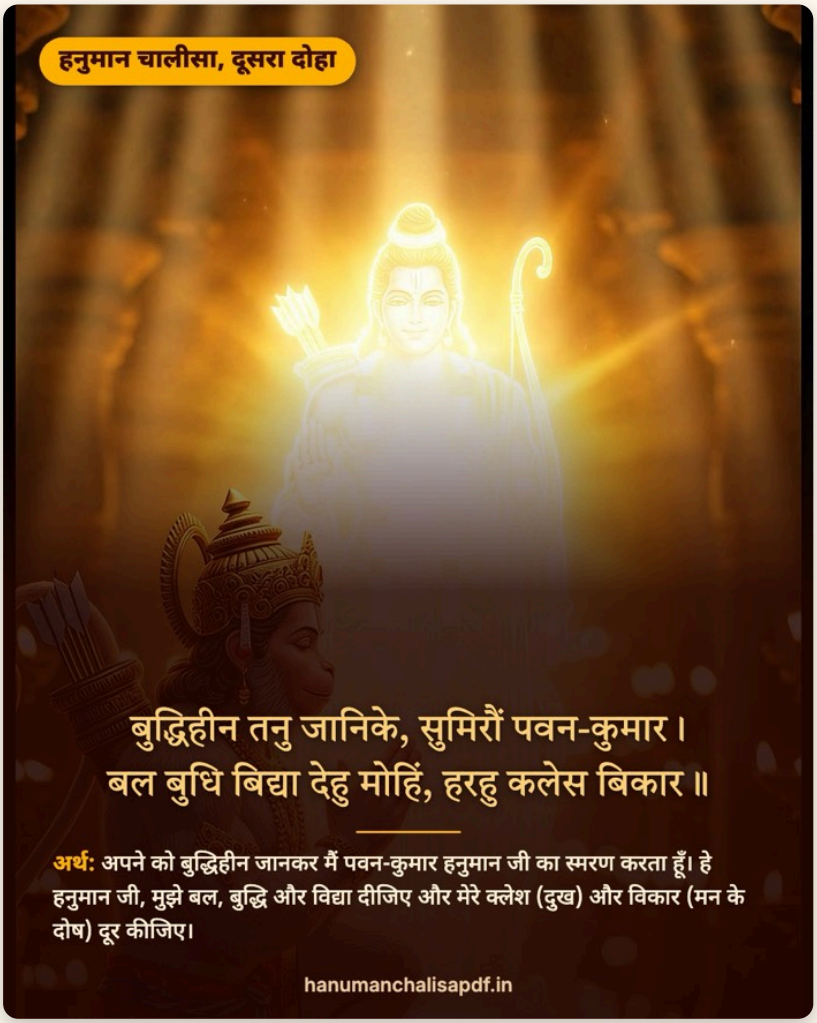
हनुमान चालीसा चित्र सहित

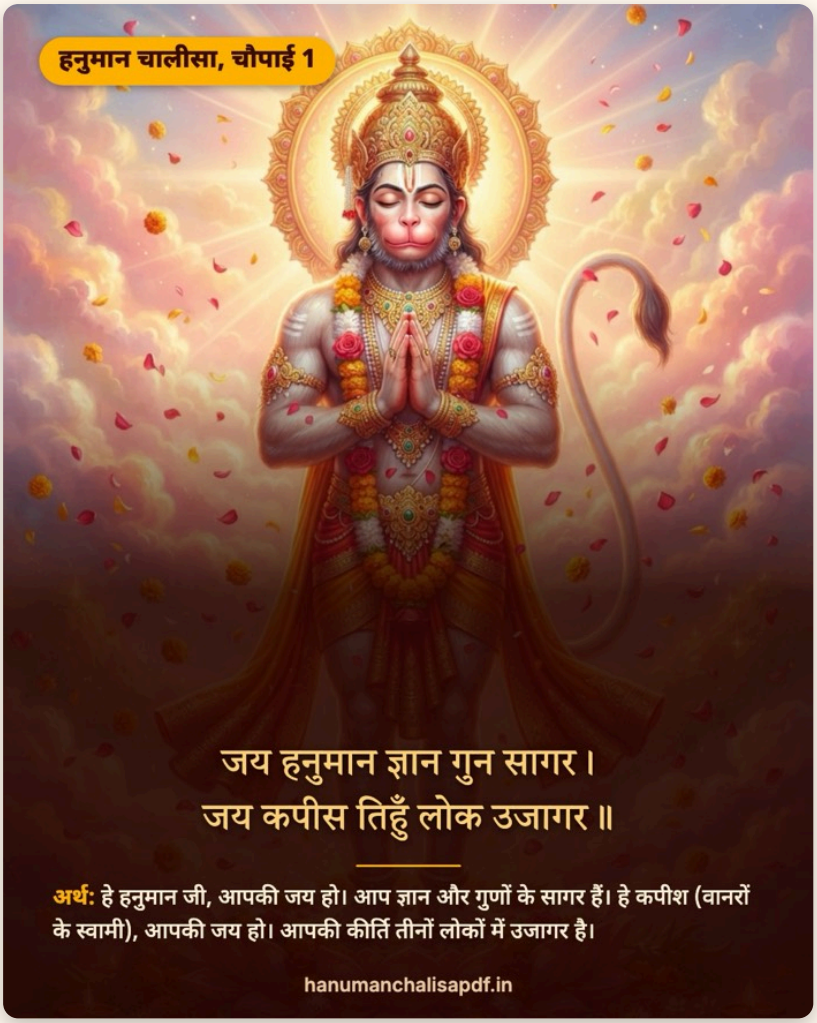
Hanuman Chalisa with Pictures

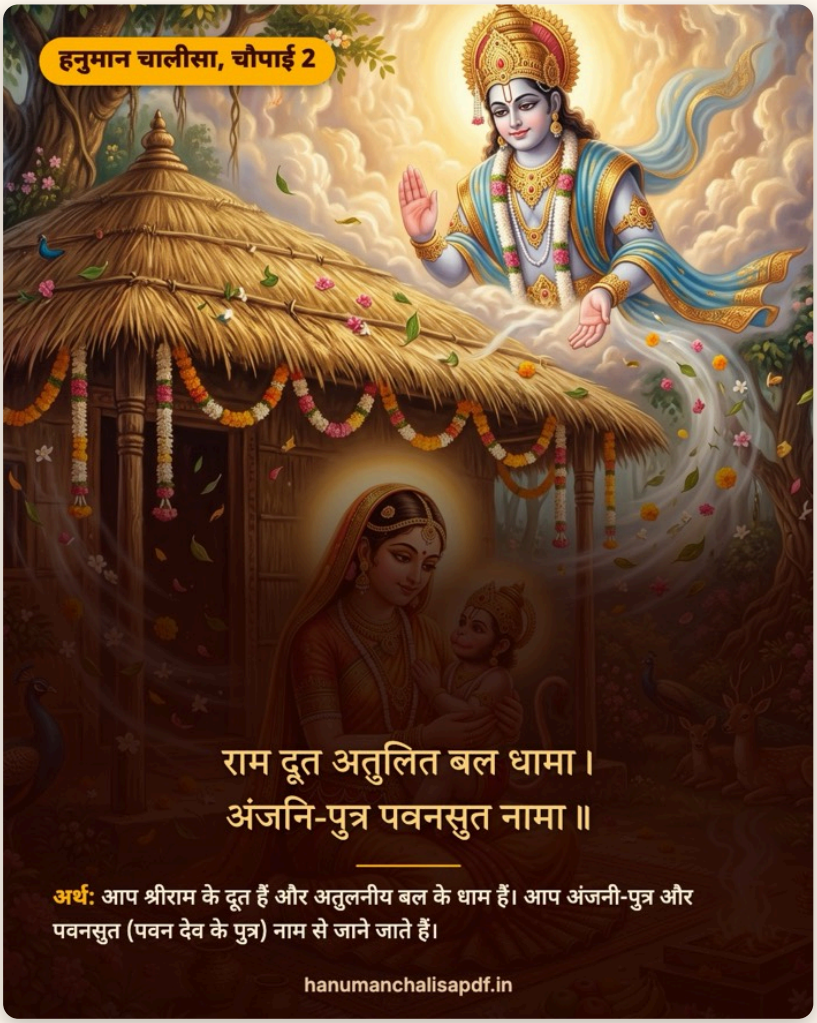


43 चित्र, हर दोहा और चौपाई अपने अर्थ के साथ। पाठ: गीता प्रेस, गोरखपुर

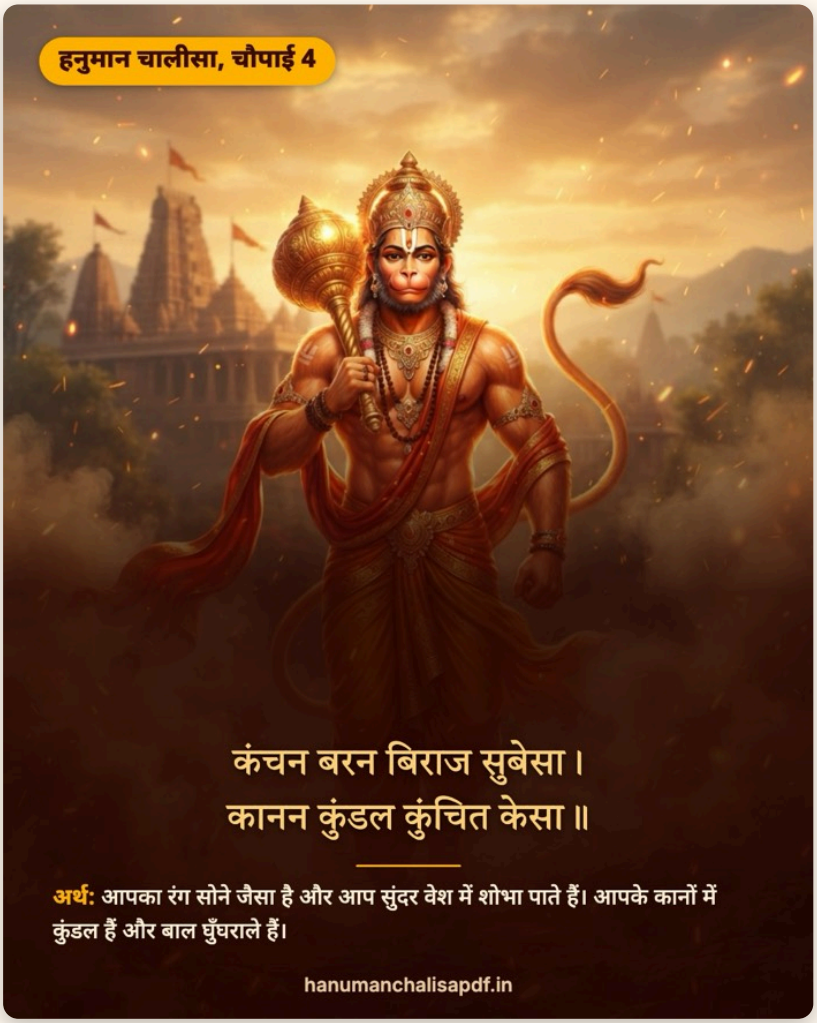

हनुमान चालीसा, पहला दोहा
जय श्री राम जय श्री राम जय श्री राम
श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥
अर्थ: श्रीगुरु के चरण-कमलों की धूल से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके मैं श्री रघुबर (श्रीराम) के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फल देने वाला है: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
hanumanchalisapdf.in

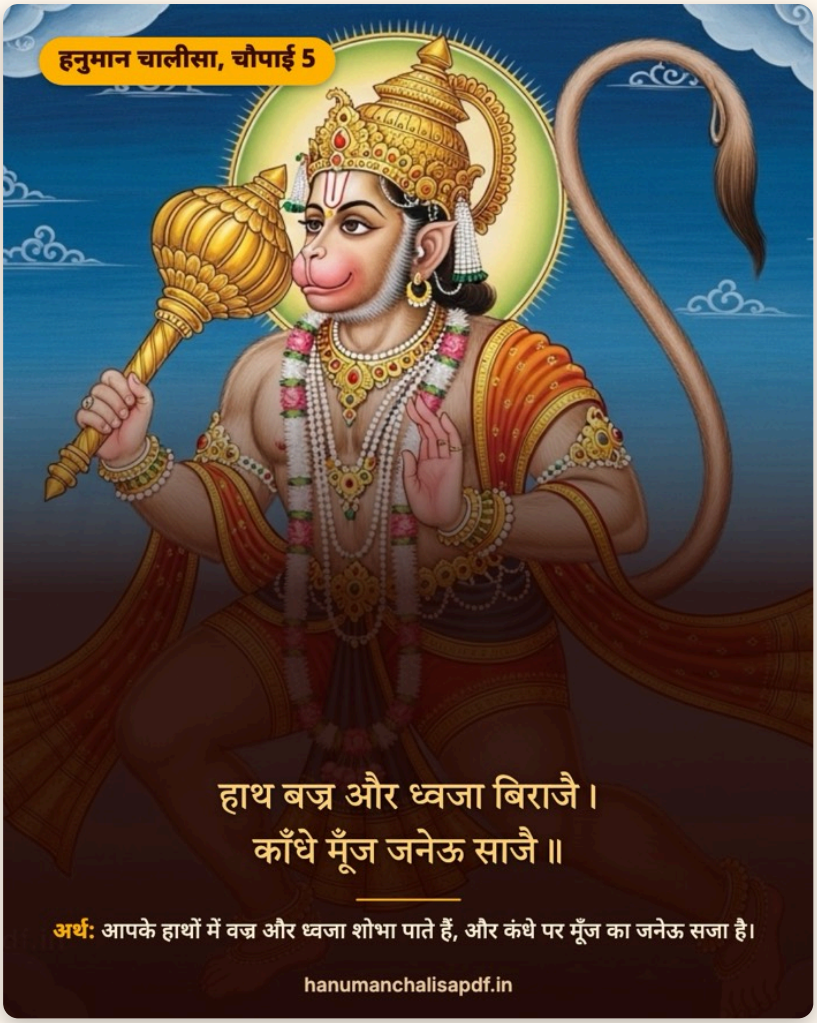

हनुमान चालीसा, दूसरा दोहा
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥
अर्थ: अपने को बुद्धिहीन जानकर मैं पवन-कुमार हनुमान जी का स्मरण करता हूँ। हे हनुमान जी, मुझे बल, बुद्धि और विद्या दीजिए और मेरे क्लेश (दुख) और विकार (मन के दोष) दूर कीजिए।
hanumanchalisapdf.in

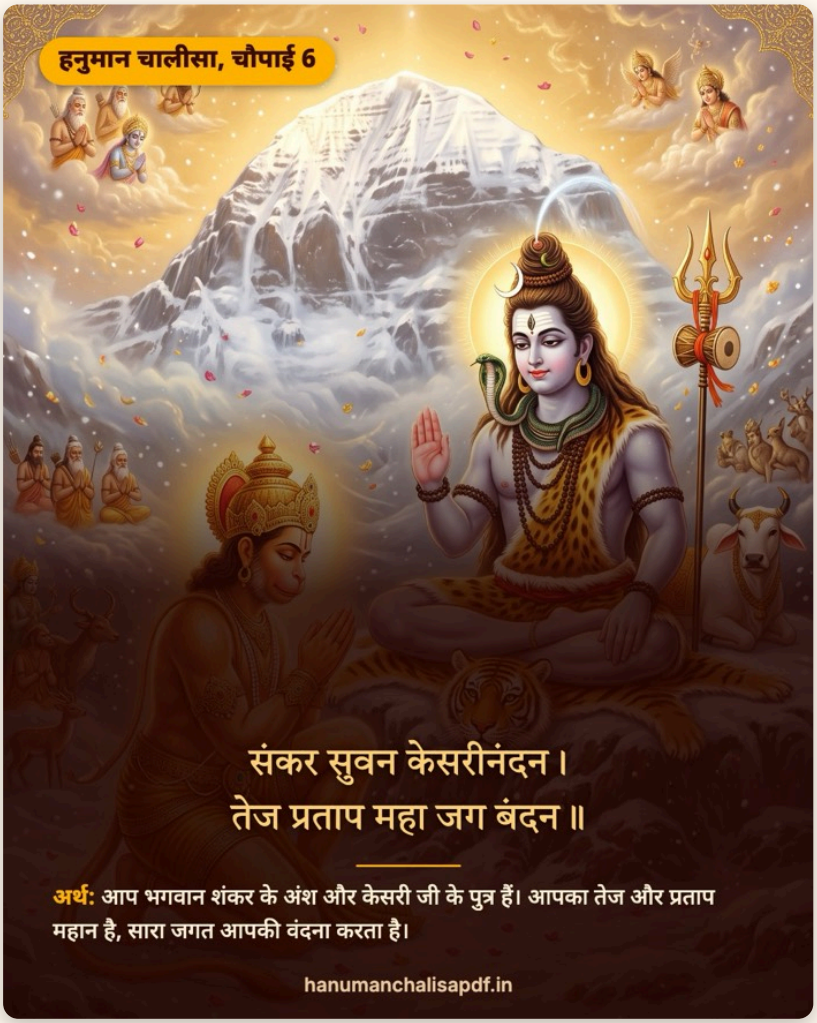

हनुमान चालीसा, चौपाई 1
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
अर्थ: हे हनुमान जी, आपकी जय हो। आप ज्ञान और गुणों के सागर हैं। हे कपीश (वानरों के स्वामी), आपकी जय हो। आपकी कीर्ति तीनों लोकों में उजागर है।
hanumanchalisapdf.in

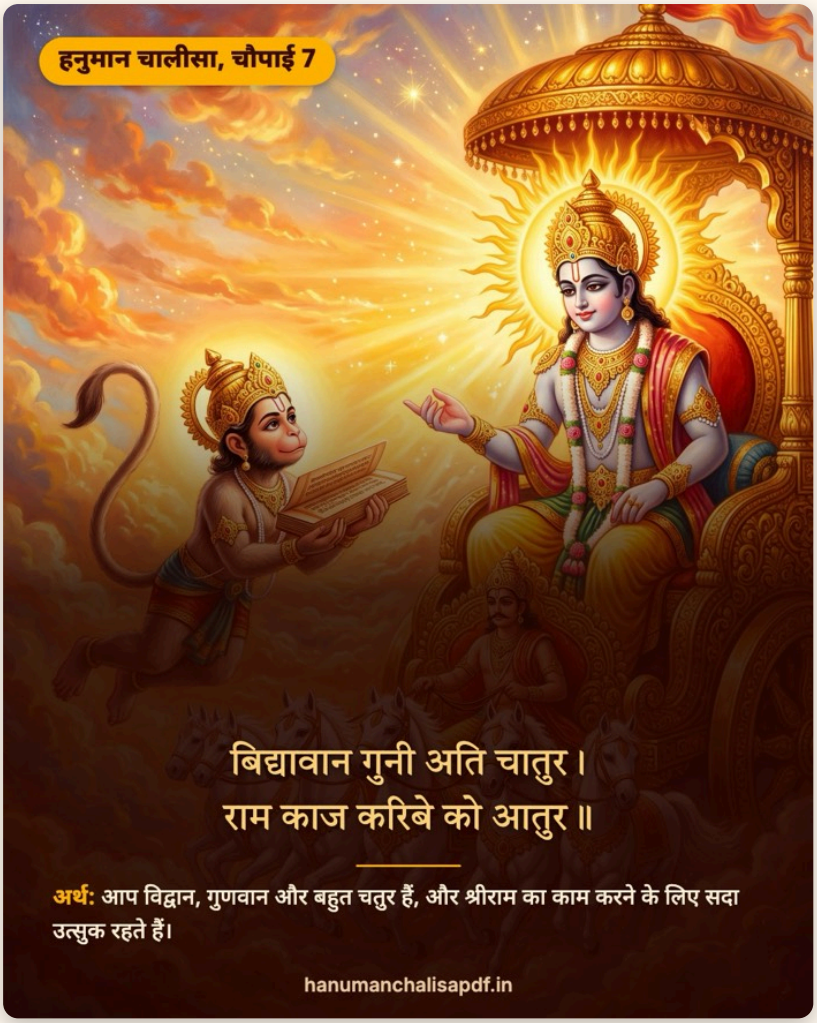

हनुमान चालीसा, चौपाई 2
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
अर्थ: आप श्रीराम के दूत हैं और अतुलनीय बल के धाम हैं। आप अंजनी-पुत्र और पवनसुत (पवन देव के पुत्र) नाम से जाने जाते हैं।
hanumanchalisapdf.in

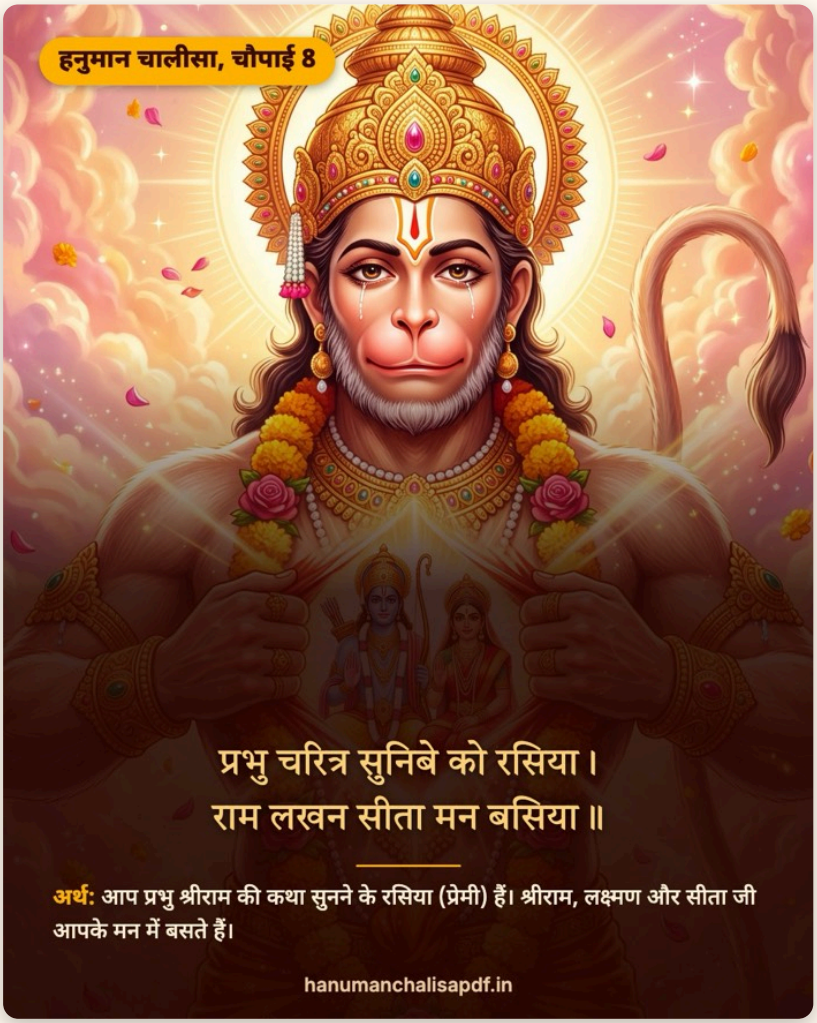

हनुमान चालीसा, चौपाई 3
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥
अर्थ: हे महावीर, आप बड़े पराक्रमी हैं और आपके अंग वज्र जैसे दृढ़ हैं। आप बुरी बुद्धि को दूर करते हैं और अच्छी बुद्धि वालों के साथी हैं।
hanumanchalisapdf.in

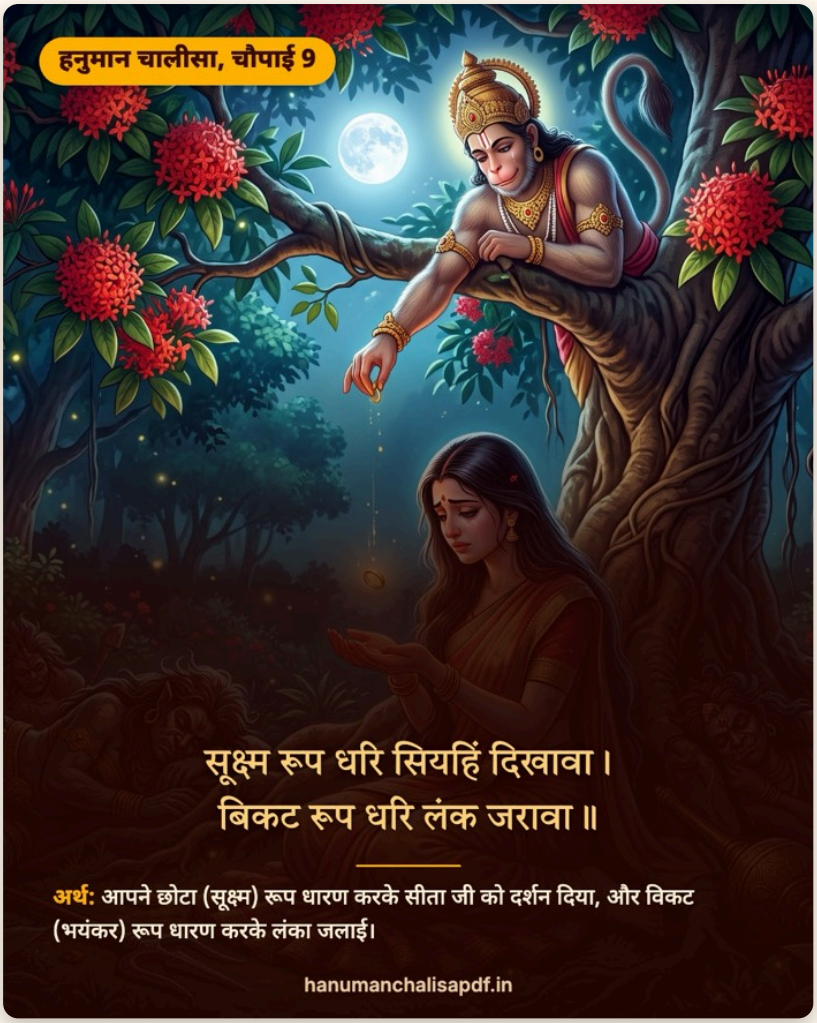

हनुमान चालीसा, चौपाई 4
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
अर्थ: आपका रंग सोने जैसा है और आप सुंदर वेश में शोभा पाते हैं। आपके कानों में कुंडल हैं और बाल घुँघराले हैं।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 5
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
अर्थ: आपके हाथों में वज्र और ध्वजा शोभा पाते हैं, और कंधे पर मूँज का जनेऊ सजा है।
hanumanchalisapdf.in

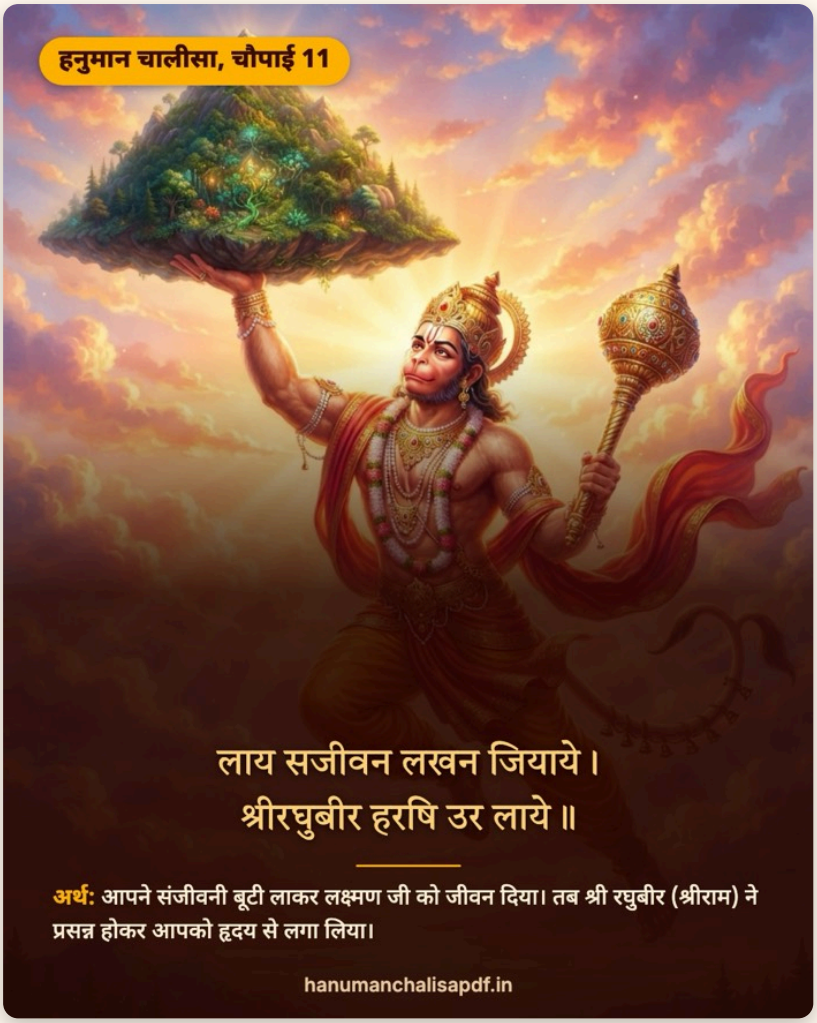

हनुमान चालीसा, चौपाई 6
संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन॥
अर्थ: आप भगवान शंकर के अंश और केसरी जी के पुत्र हैं। आपका तेज और प्रताप महान है, सारा जगत आपकी वंदना करता है।
hanumanchalisapdf.in

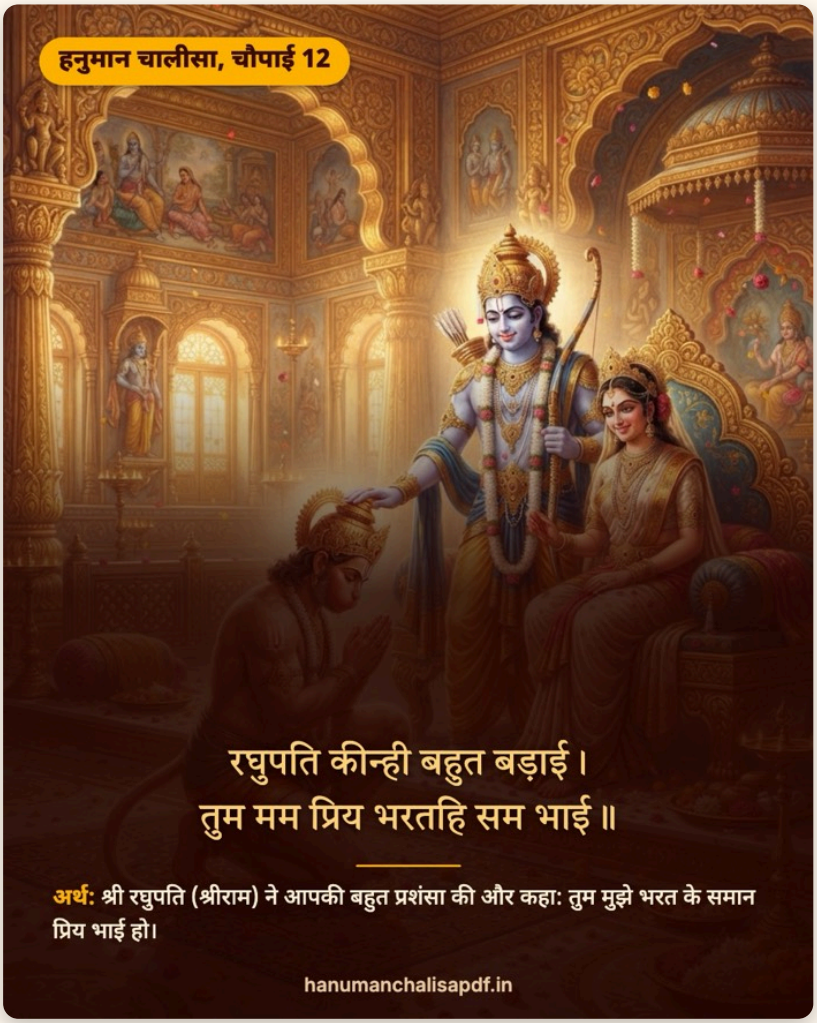

हनुमान चालीसा, चौपाई 7
बिद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥
अर्थ: आप विद्वान, गुणवान और बहुत चतुर हैं, और श्रीराम का काम करने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं।
hanumanchalisapdf.in

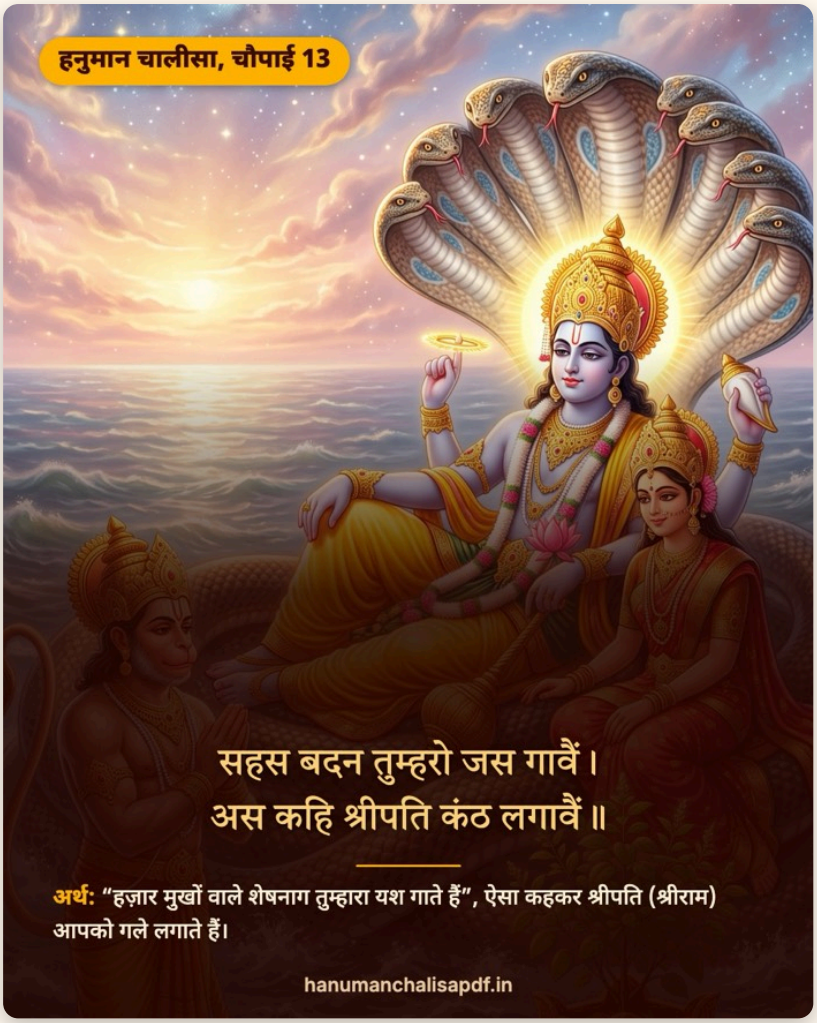

हनुमान चालीसा, चौपाई 8
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥
अर्थ: आप प्रभु श्रीराम की कथा सुनने के रसिया (प्रेमी) हैं। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी आपके मन में बसते हैं।
hanumanchalisapdf.in

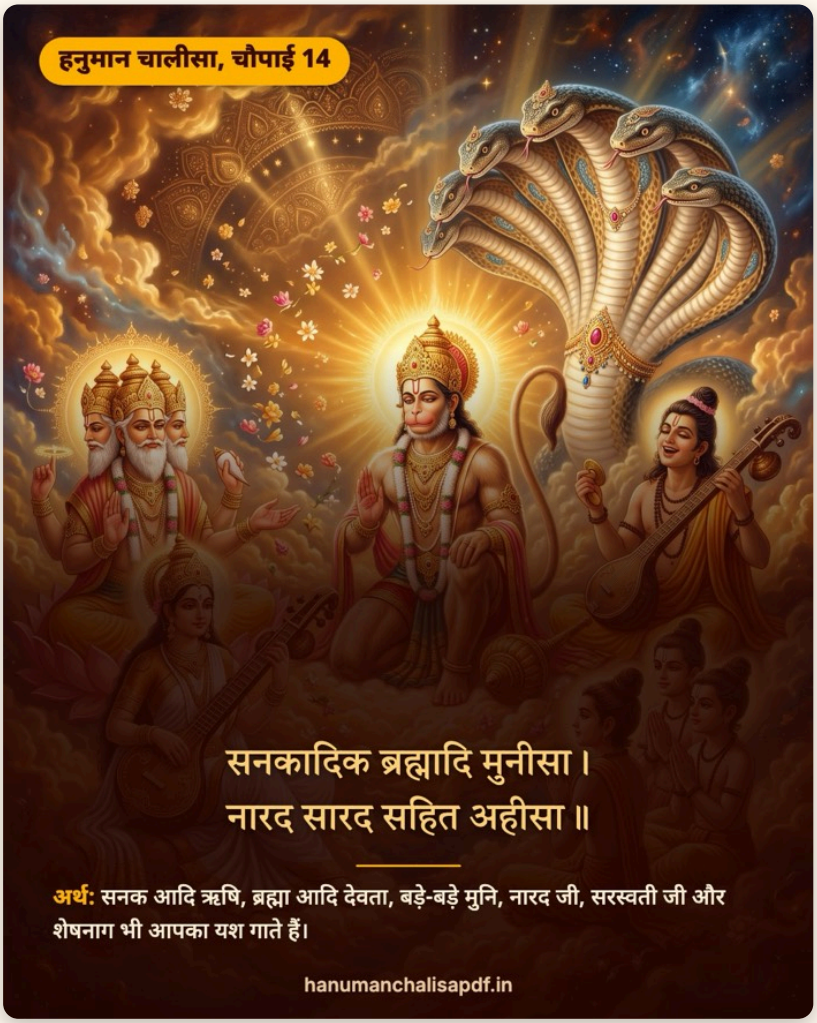

हनुमान चालीसा, चौपाई 9
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
अर्थ: आपने छोटा (सूक्ष्म) रूप धारण करके सीता जी को दर्शन दिया, और विकट (भयंकर) रूप धारण करके लंका जलाई।
hanumanchalisapdf.in

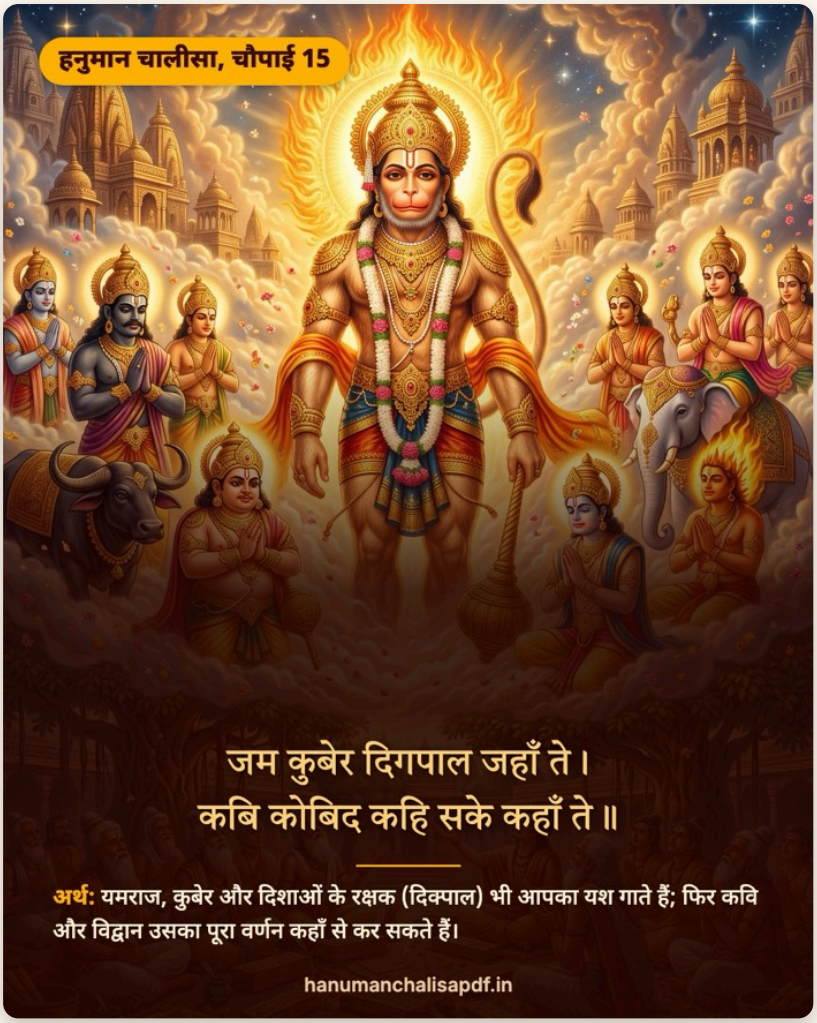

हनुमान चालीसा, चौपाई 10
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥
अर्थ: आपने भीम (विशाल) रूप धारण करके असुरों का संहार किया और श्रीरामचंद्र जी के काम सँवारे।
hanumanchalisapdf.in

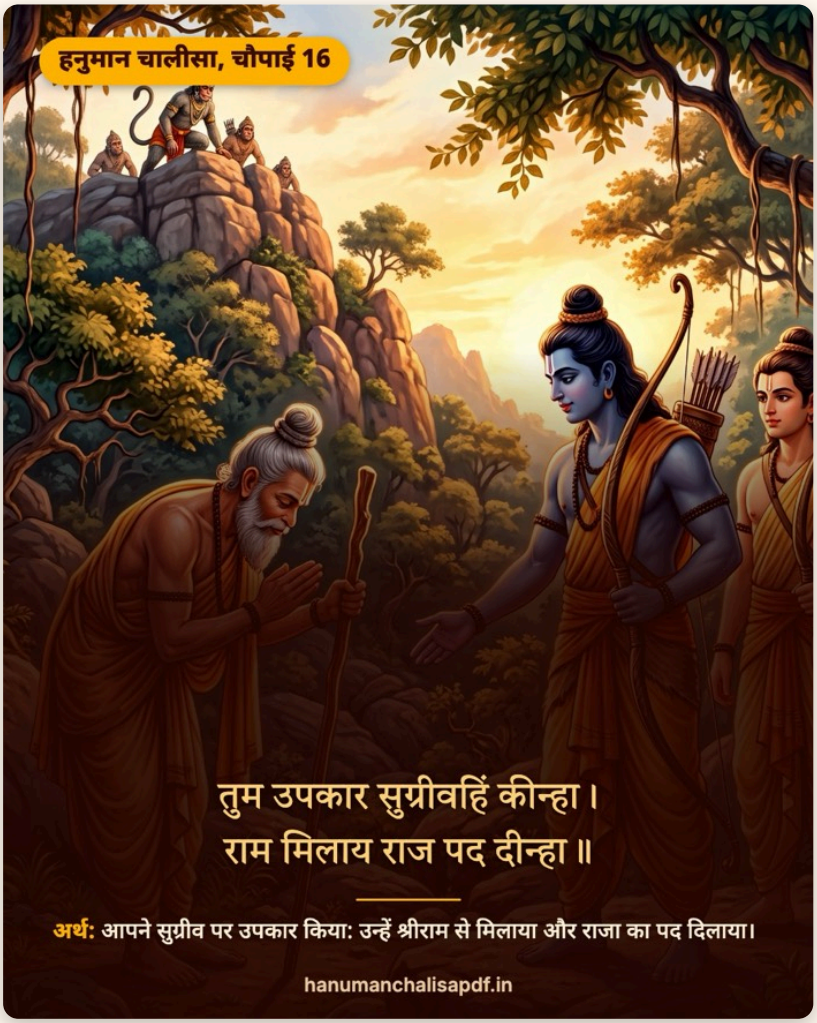

हनुमान चालीसा, चौपाई 11
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
अर्थ: आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को जीवन दिया। तब श्री रघुबीर (श्रीराम) ने प्रसन्न होकर आपको हृदय से लगा लिया।
hanumanchalisapdf.in

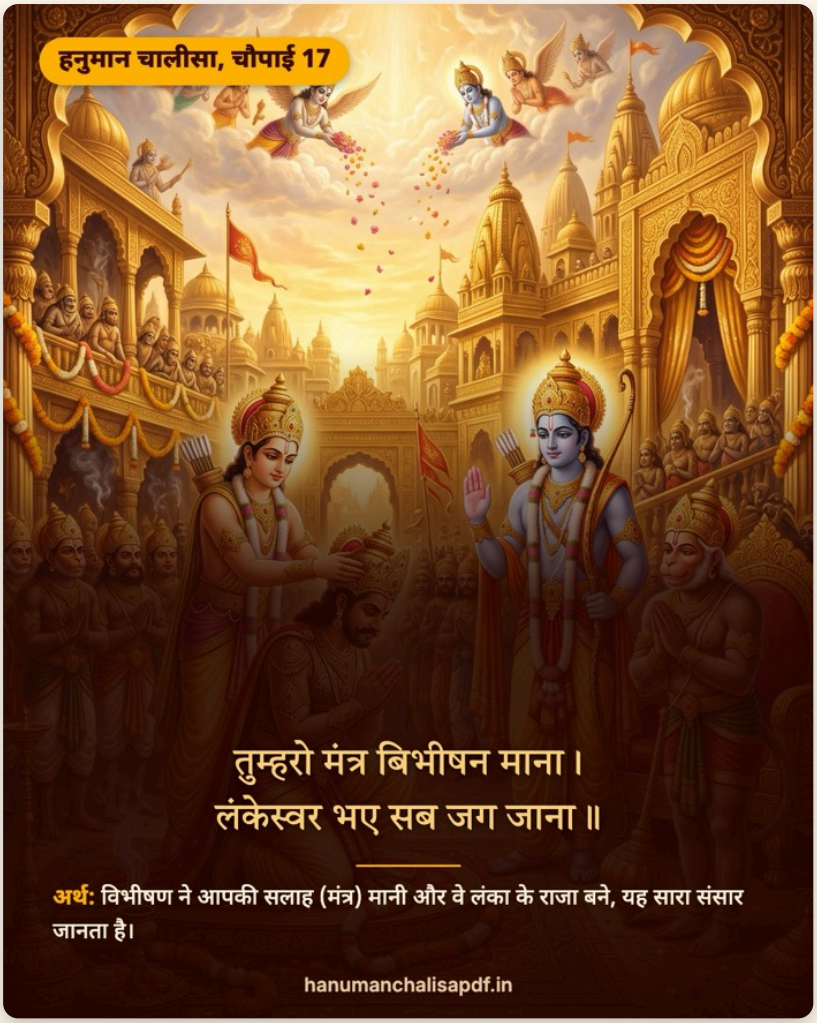

हनुमान चालीसा, चौपाई 12
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
अर्थ: श्री रघुपति (श्रीराम) ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा: तुम मुझे भरत के समान प्रिय भाई हो।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 13
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
अर्थ: “हज़ार मुखों वाले शेषनाग तुम्हारा यश गाते हैं”, ऐसा कहकर श्रीपति (श्रीराम) आपको गले लगाते हैं।
hanumanchalisapdf.in

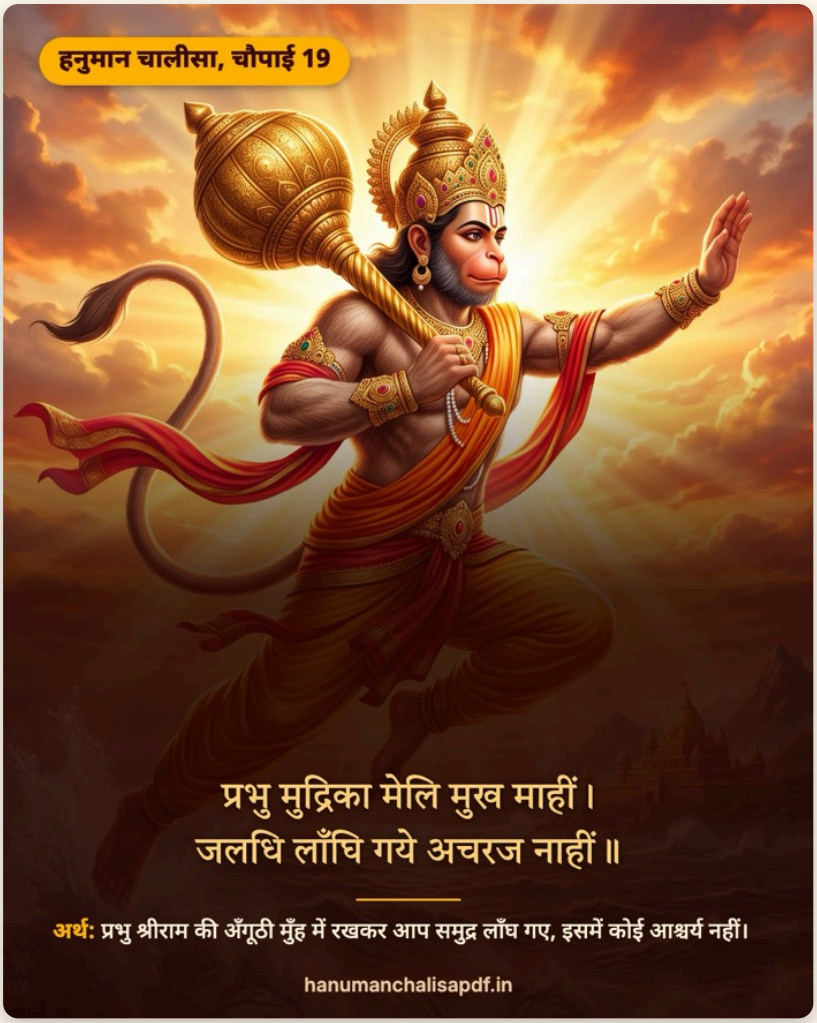

हनुमान चालीसा, चौपाई 14
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥
अर्थ: सनक आदि ऋषि, ब्रह्मा आदि देवता, बड़े-बड़े मुनि, नारद जी, सरस्वती जी और शेषनाग भी आपका यश गाते हैं।
hanumanchalisapdf.in

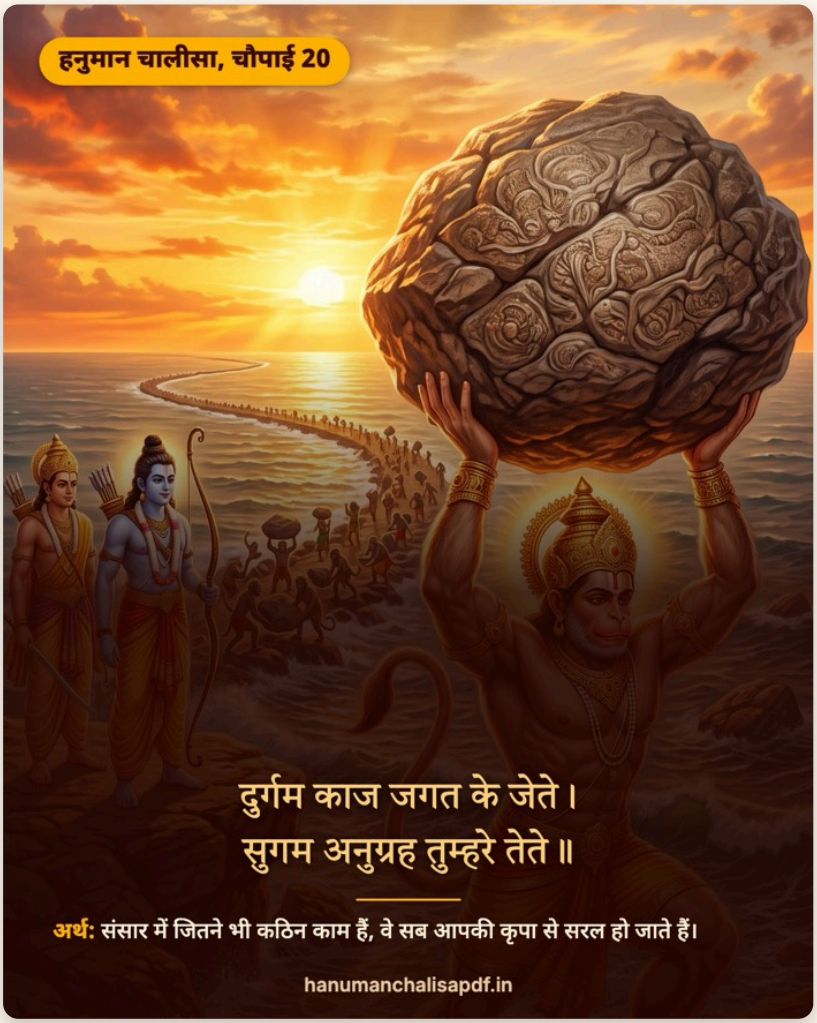

हनुमान चालीसा, चौपाई 15
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
अर्थ: यमराज, कुबेर और दिशाओं के रक्षक (दिक्पाल) भी आपका यश गाते हैं; फिर कवि और विद्वान उसका पूरा वर्णन कहाँ से कर सकते हैं।
hanumanchalisapdf.in

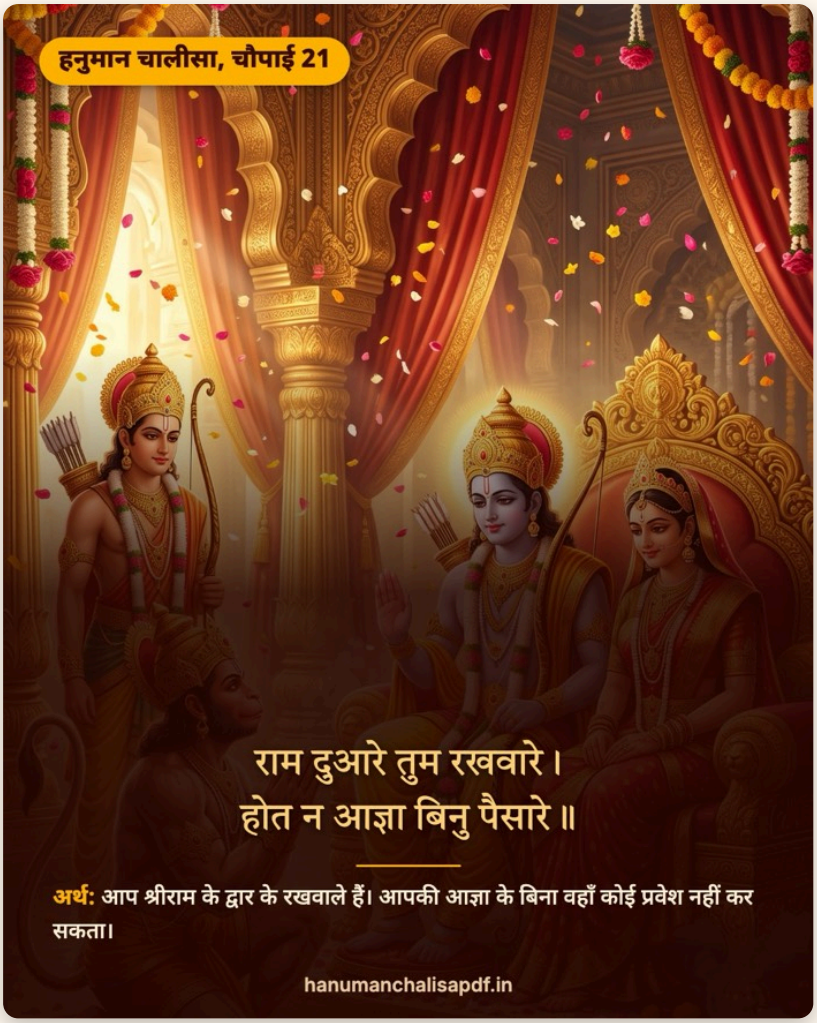

हनुमान चालीसा, चौपाई 16
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
अर्थ: आपने सुग्रीव पर उपकार किया: उन्हें श्रीराम से मिलाया और राजा का पद दिलाया।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 17
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना॥
अर्थ: विभीषण ने आपकी सलाह (मंत्र) मानी और वे लंका के राजा बने, यह सारा संसार जानता है।
hanumanchalisapdf.in

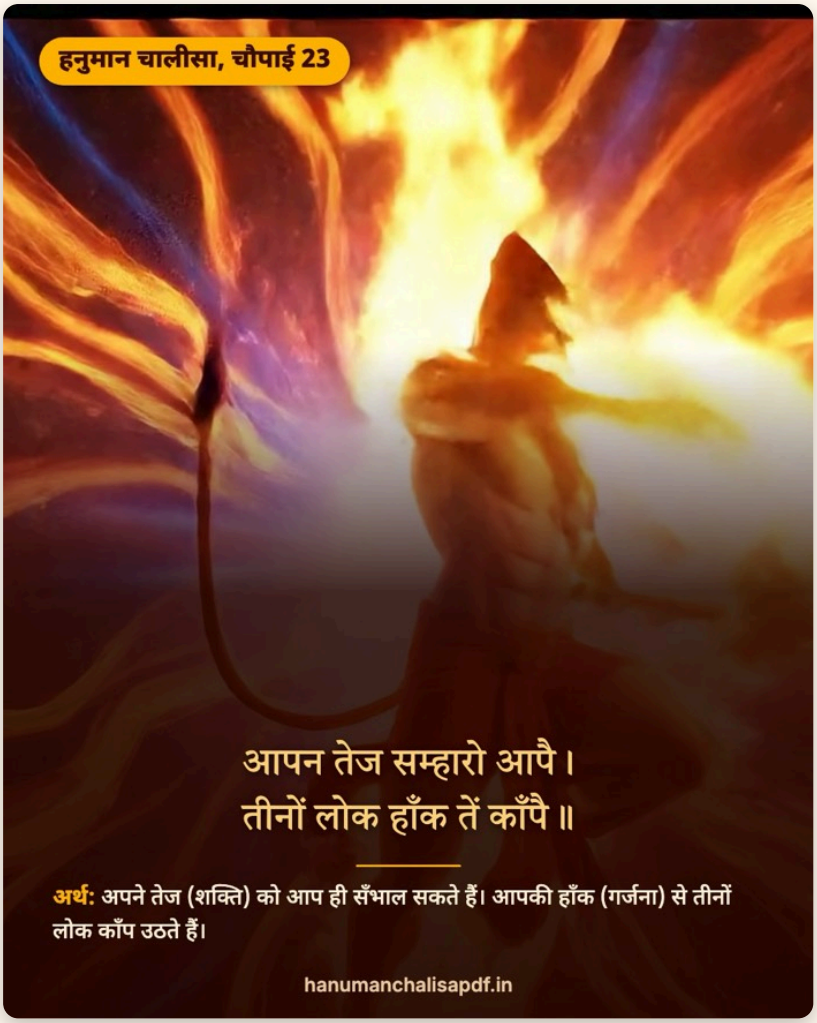

हनुमान चालीसा, चौपाई 18
जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
अर्थ: जो सूर्य युग-सहस्र योजन दूर है, उसे आपने मीठा फल समझकर निगल लिया।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 19
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
अर्थ: प्रभु श्रीराम की अँगूठी मुँह में रखकर आप समुद्र लाँघ गए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।
hanumanchalisapdf.in

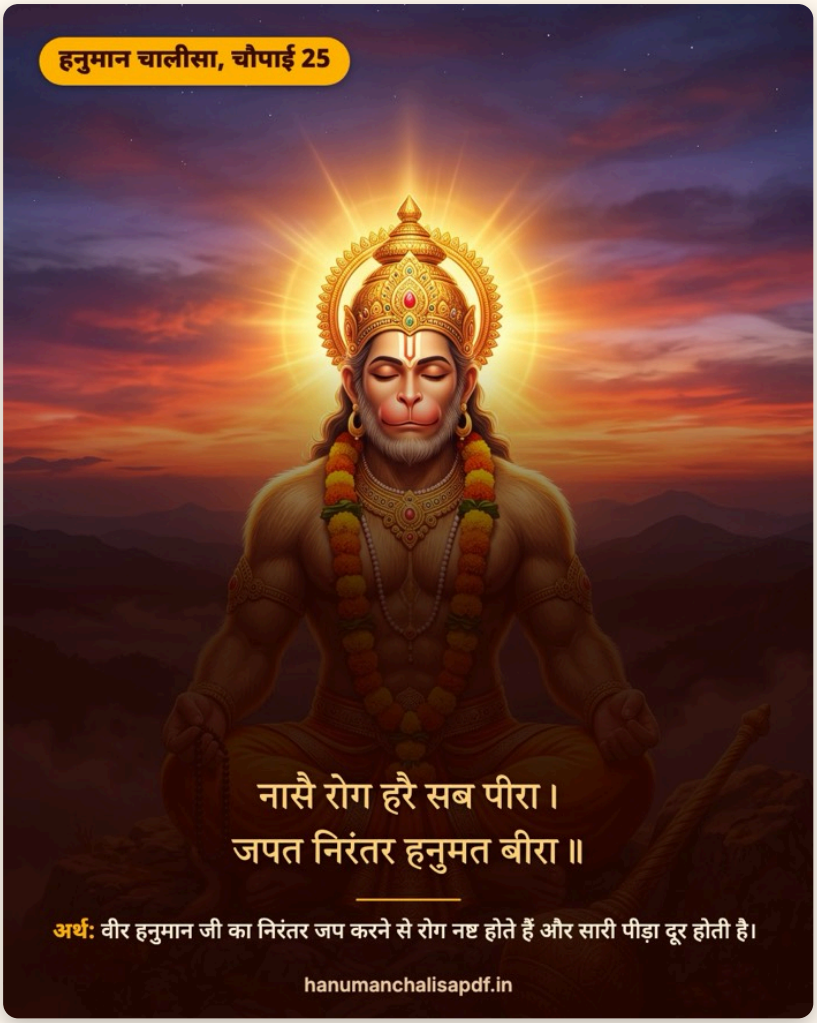

हनुमान चालीसा, चौपाई 20
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
अर्थ: संसार में जितने भी कठिन काम हैं, वे सब आपकी कृपा से सरल हो जाते हैं।
hanumanchalisapdf.in

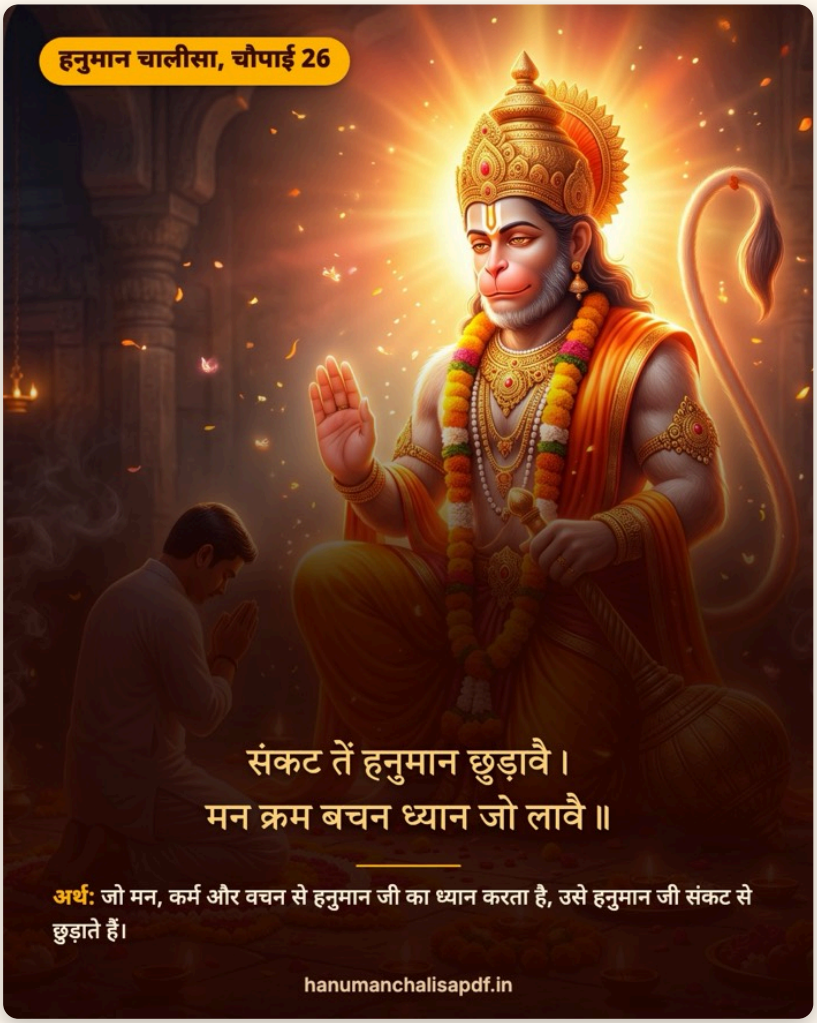

हनुमान चालीसा, चौपाई 21
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
अर्थ: आप श्रीराम के द्वार के रखवाले हैं। आपकी आज्ञा के बिना वहाँ कोई प्रवेश नहीं कर सकता।
hanumanchalisapdf.in

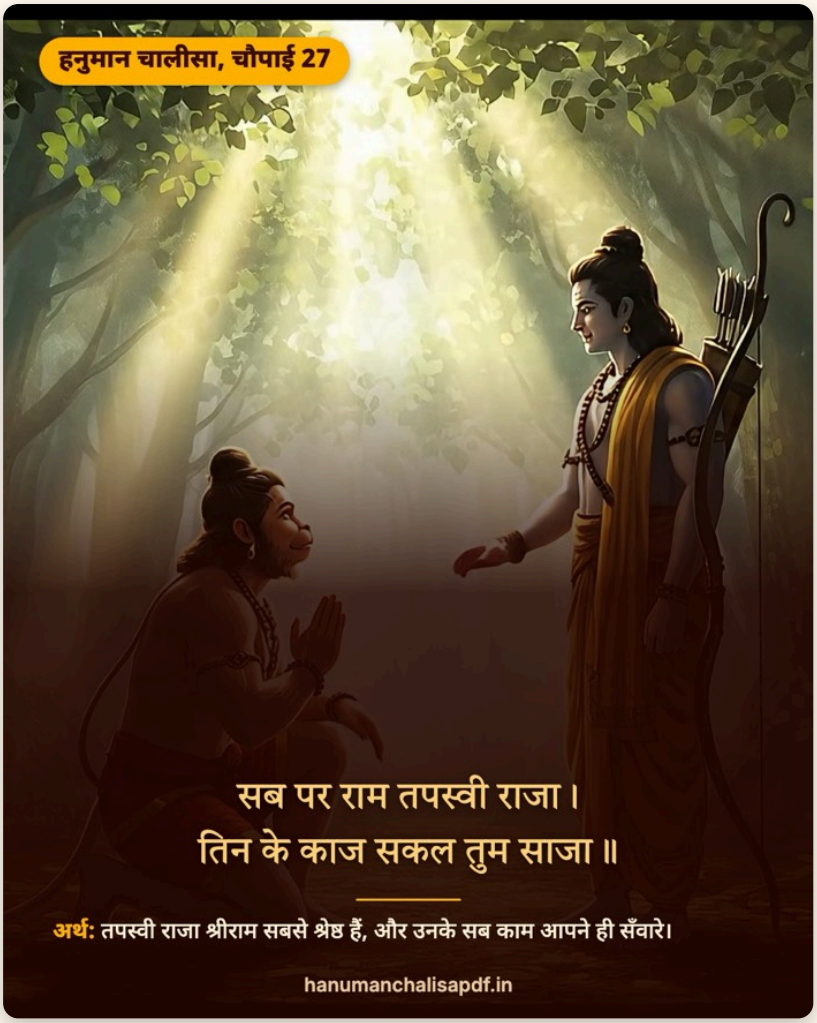

हनुमान चालीसा, चौपाई 22
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना॥
अर्थ: जो आपकी शरण में आता है, उसे सब सुख मिलते हैं। जब आप रक्षक हों, तो किसी का डर नहीं रहता।
hanumanchalisapdf.in

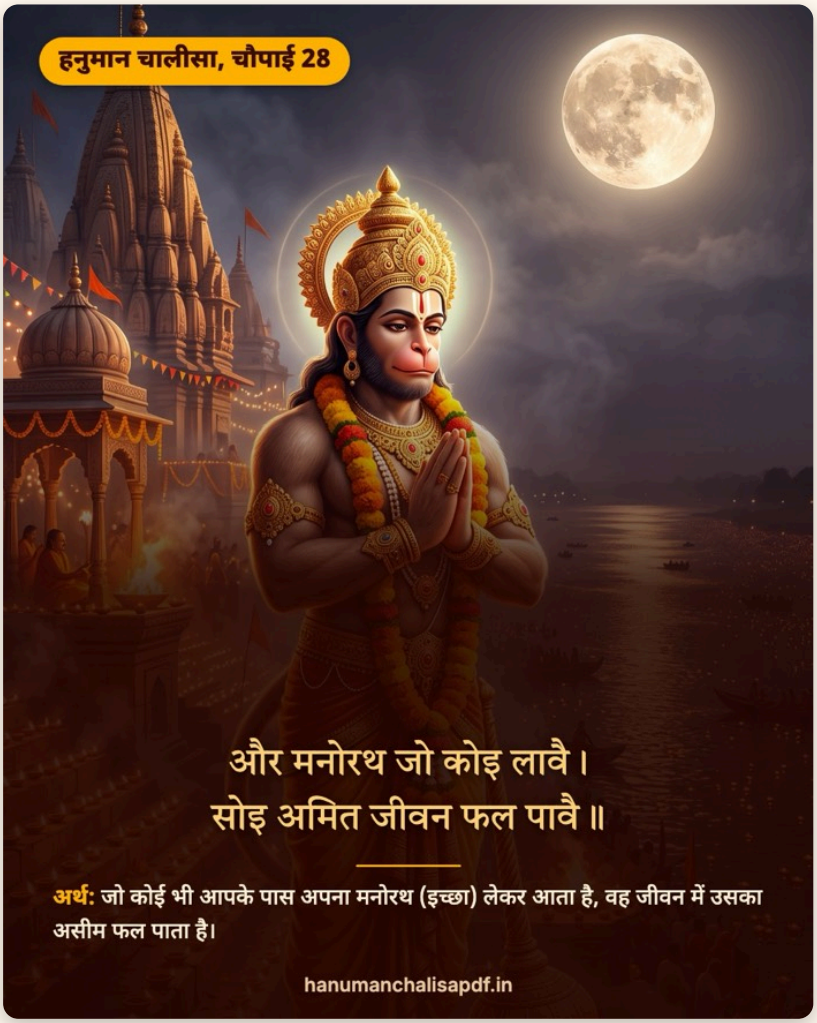

हनुमान चालीसा, चौपाई 23
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
अर्थ: अपने तेज (शक्ति) को आप ही सँभाल सकते हैं। आपकी हाँक (गर्जना) से तीनों लोक काँप उठते हैं।
hanumanchalisapdf.in

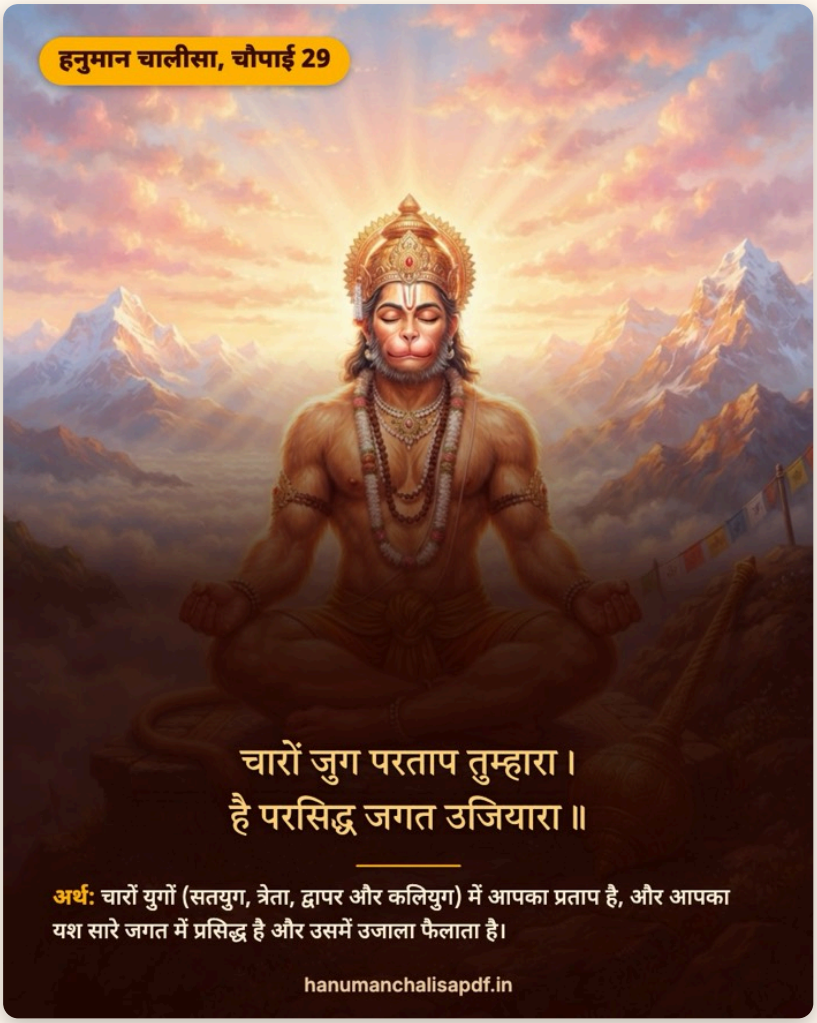

हनुमान चालीसा, चौपाई 24
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥
अर्थ: जब महावीर हनुमान जी का नाम लिया जाता है, तब भूत और पिशाच पास नहीं आते।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 25
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
अर्थ: वीर हनुमान जी का निरंतर जप करने से रोग नष्ट होते हैं और सारी पीड़ा दूर होती है।
hanumanchalisapdf.in

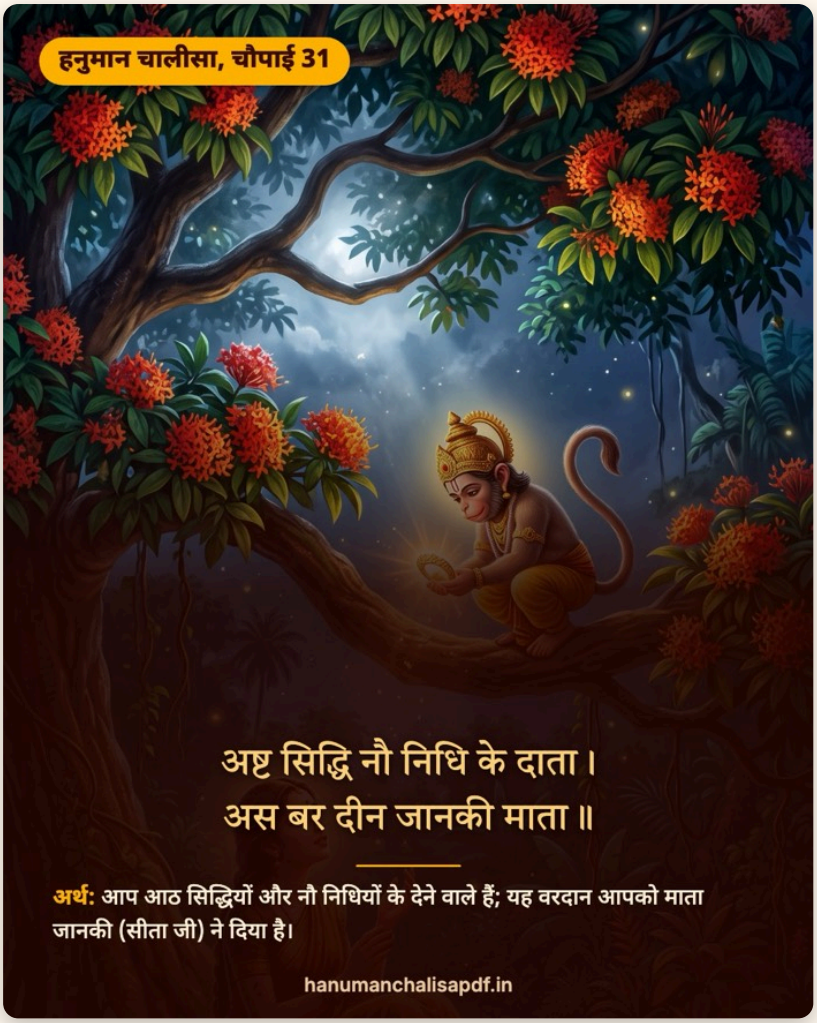

हनुमान चालीसा, चौपाई 26
संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
अर्थ: जो मन, कर्म और वचन से हनुमान जी का ध्यान करता है, उसे हनुमान जी संकट से छुड़ाते हैं।
hanumanchalisapdf.in

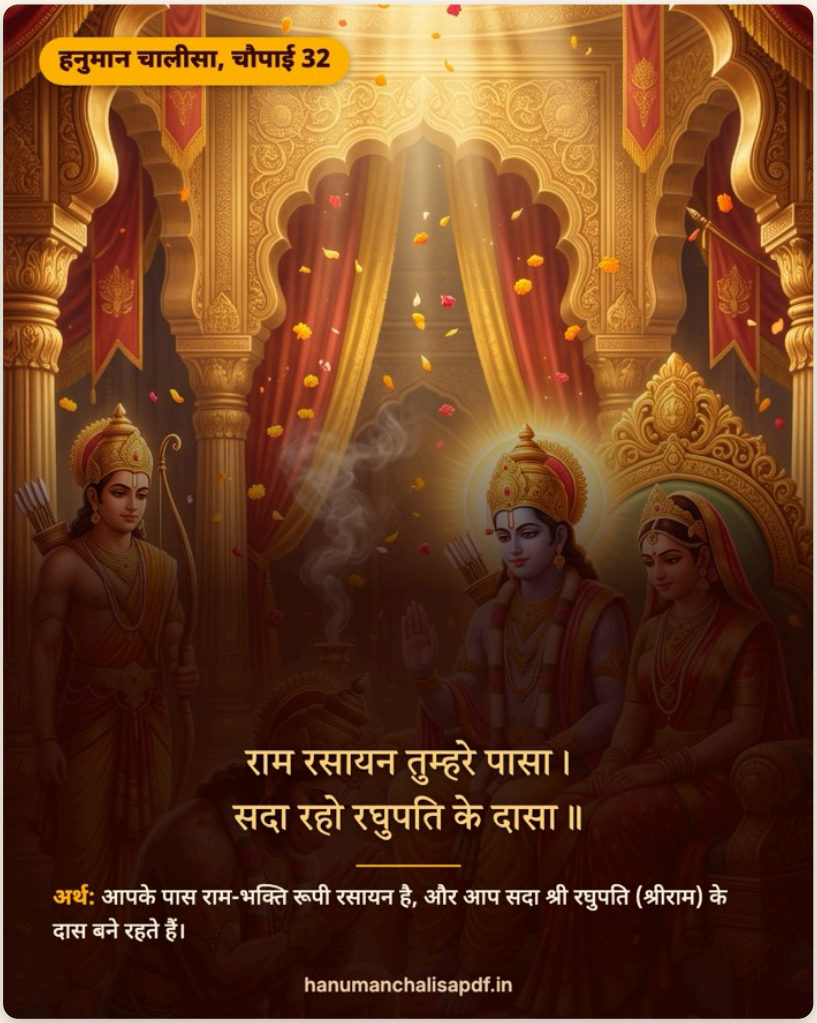

हनुमान चालीसा, चौपाई 27
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥
अर्थ: तपस्वी राजा श्रीराम सबसे श्रेष्ठ हैं, और उनके सब काम आपने ही सँवारे।
hanumanchalisapdf.in

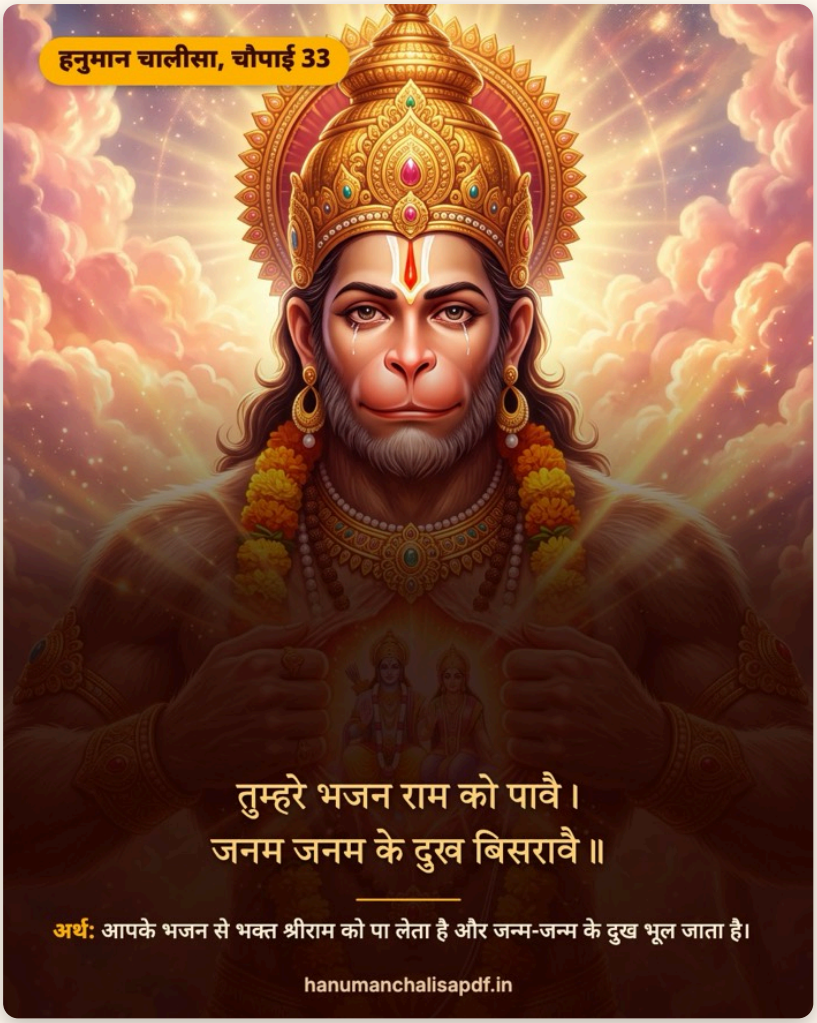

हनुमान चालीसा, चौपाई 28
और मनोरथ जो कोइ लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥
अर्थ: जो कोई भी आपके पास अपना मनोरथ (इच्छा) लेकर आता है, वह जीवन में उसका असीम फल पाता है।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 29
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥
अर्थ: चारों युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) में आपका प्रताप है, और आपका यश सारे जगत में प्रसिद्ध है और उसमें उजाला फैलाता है।
hanumanchalisapdf.in

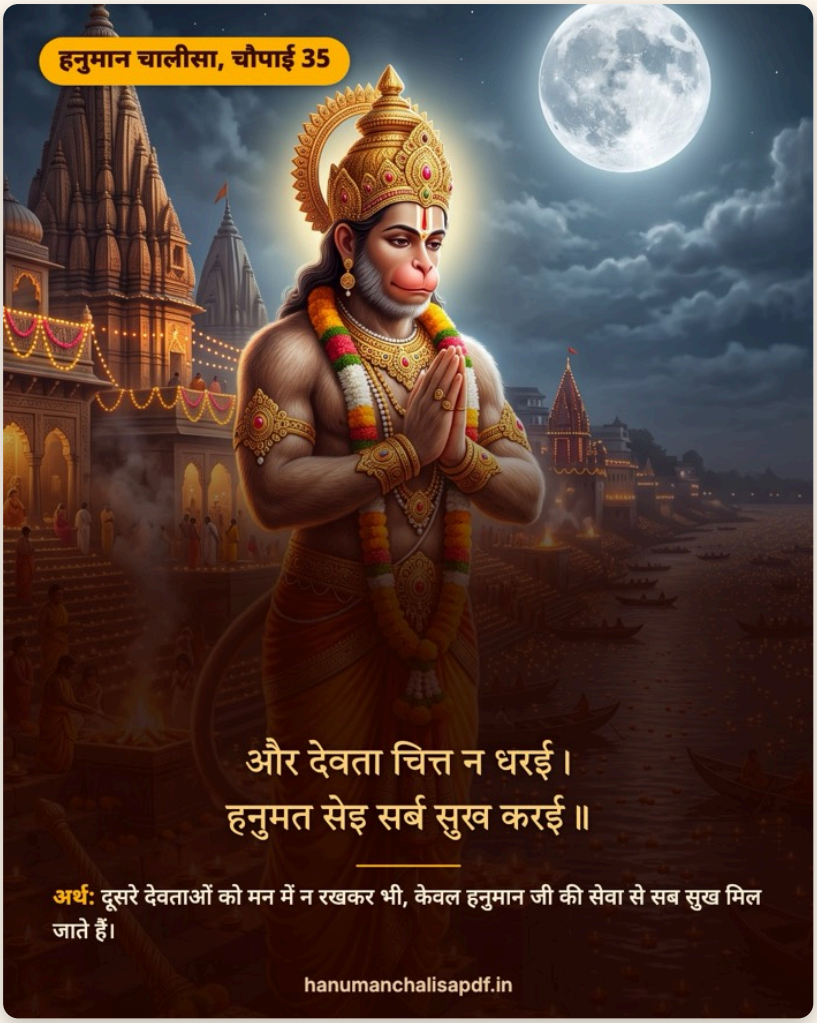

हनुमान चालीसा, चौपाई 30
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥
अर्थ: आप साधु-संतों के रक्षक हैं, असुरों का नाश करने वाले हैं और श्रीराम के दुलारे हैं।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 31
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥
अर्थ: आप आठ सिद्धियों और नौ निधियों के देने वाले हैं; यह वरदान आपको माता जानकी (सीता जी) ने दिया है।
hanumanchalisapdf.in

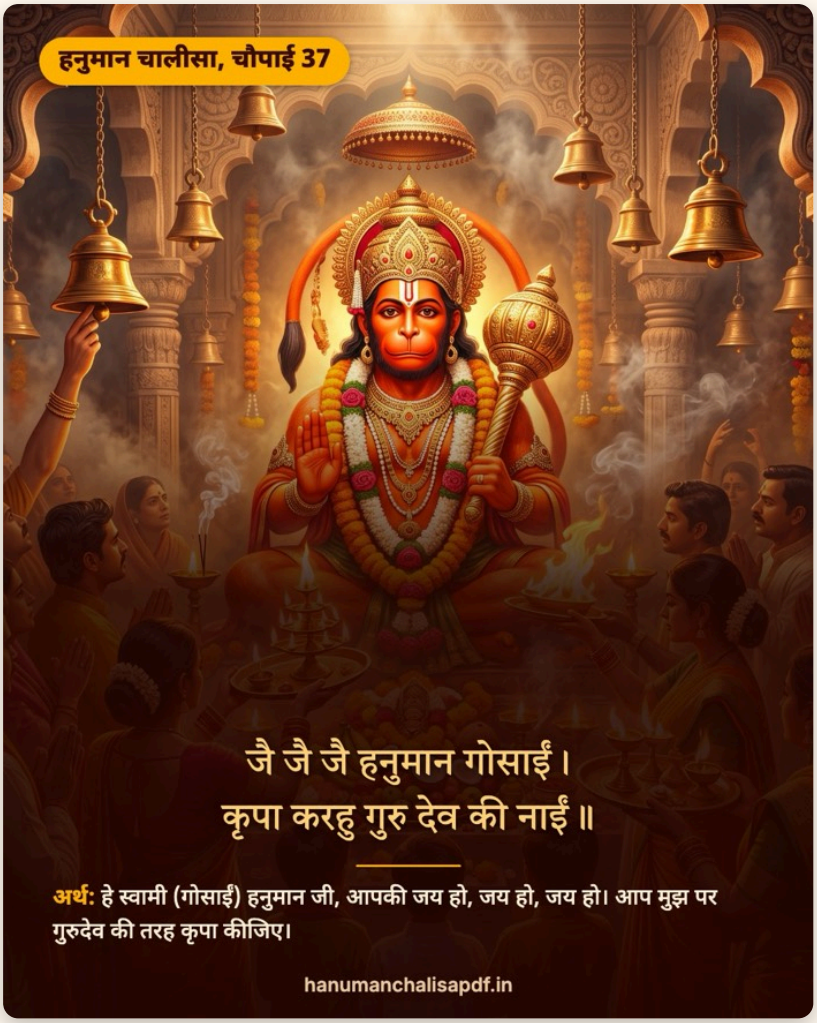

हनुमान चालीसा, चौपाई 32
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥
अर्थ: आपके पास राम-भक्ति रूपी रसायन है, और आप सदा श्री रघुपति (श्रीराम) के दास बने रहते हैं।
hanumanchalisapdf.in

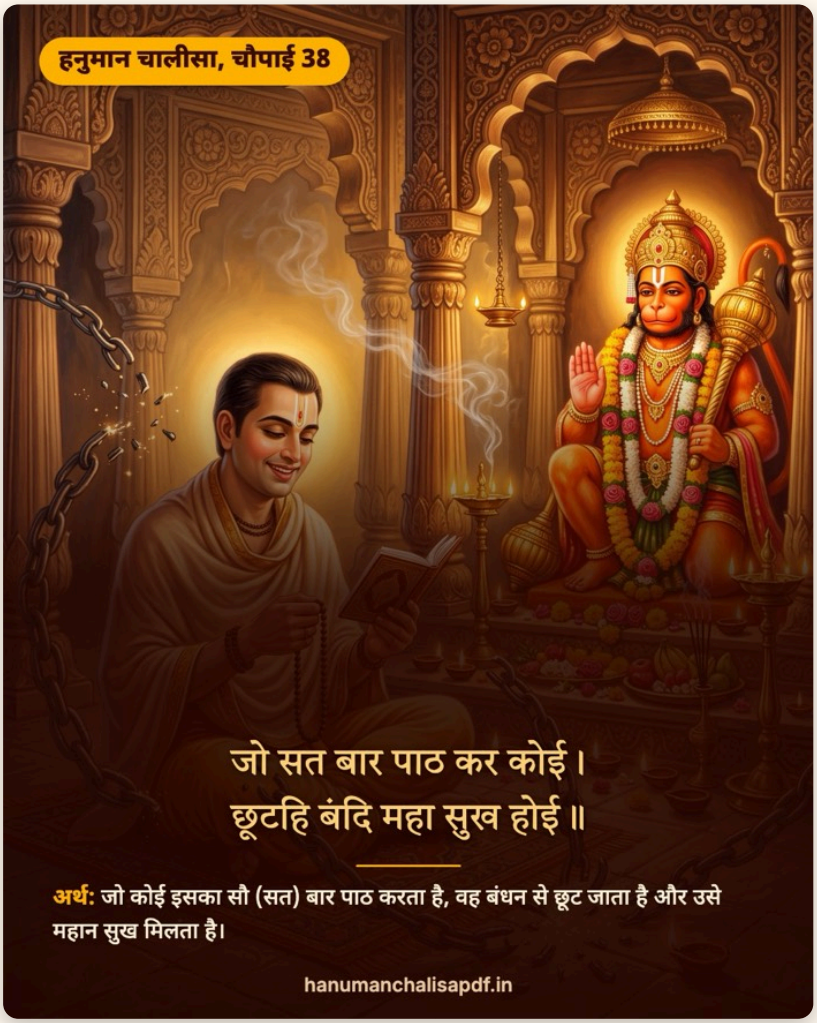

हनुमान चालीसा, चौपाई 33
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अर्थ: आपके भजन से भक्त श्रीराम को पा लेता है और जन्म-जन्म के दुख भूल जाता है।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 34
अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
अर्थ: ऐसा भक्त अंत समय में श्री रघुबर (श्रीराम) के धाम जाता है, और जहाँ भी जन्म ले, हरि-भक्त कहलाता है।
hanumanchalisapdf.in

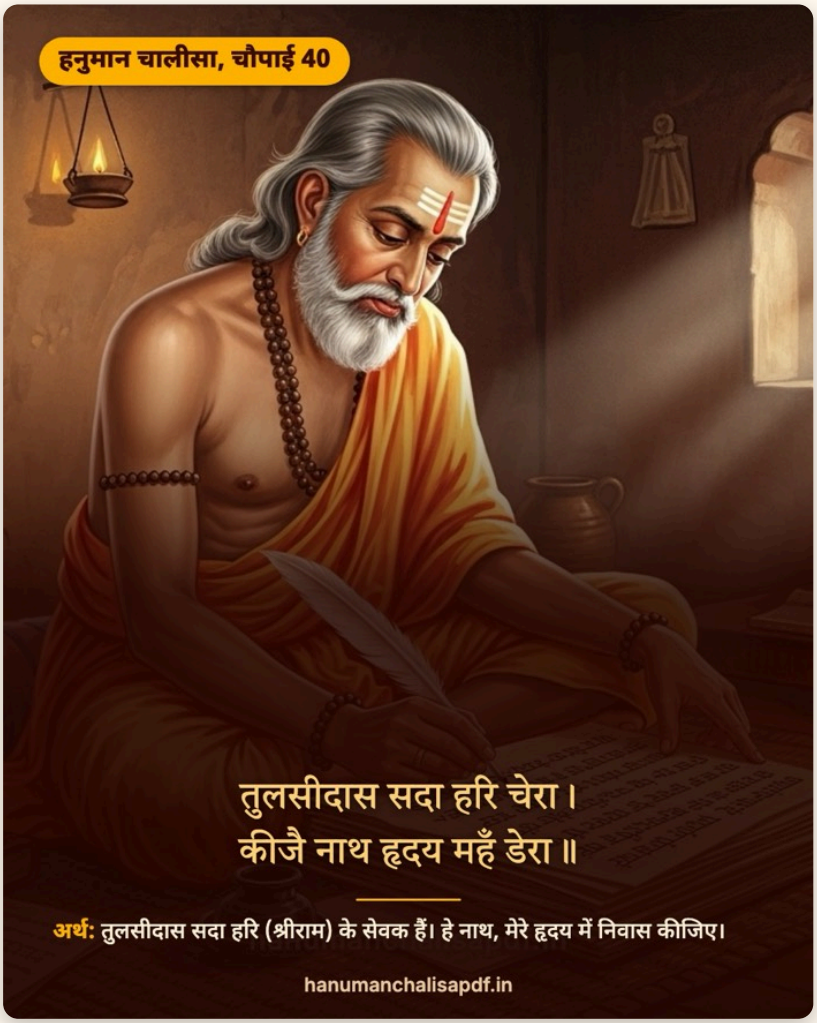

हनुमान चालीसा, चौपाई 35
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥
अर्थ: दूसरे देवताओं को मन में न रखकर भी, केवल हनुमान जी की सेवा से सब सुख मिल जाते हैं।
hanumanchalisapdf.in

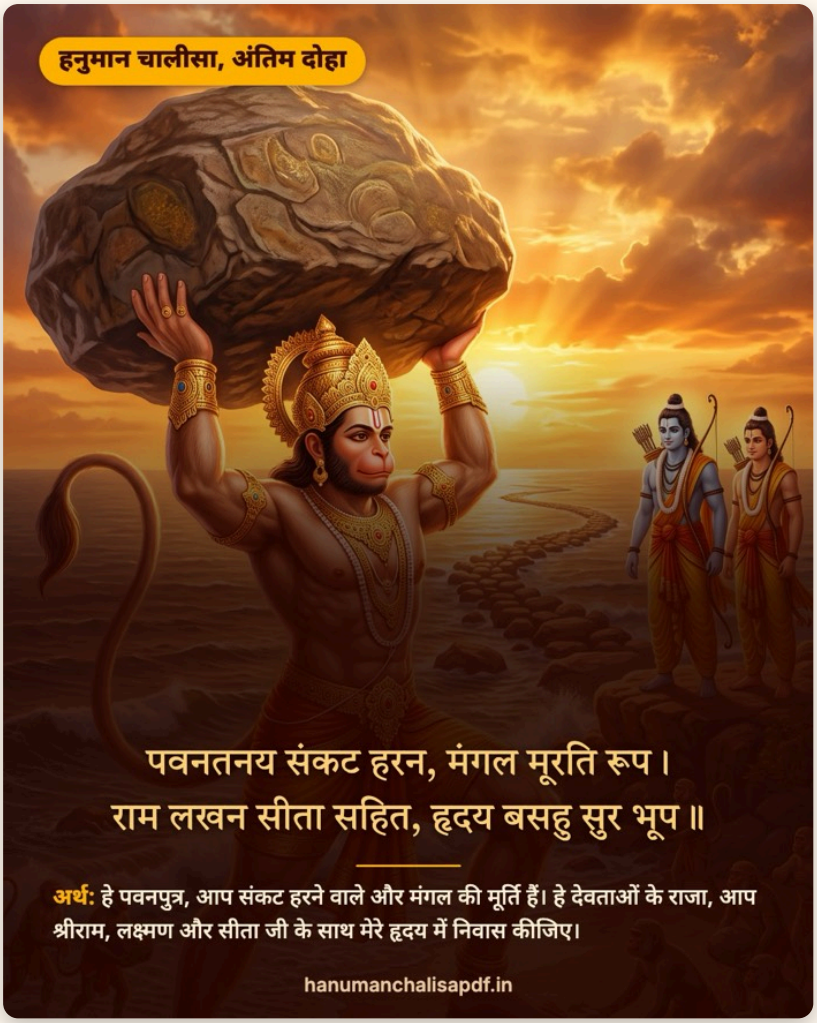

हनुमान चालीसा, चौपाई 36
संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
अर्थ: जो बलवीर हनुमान जी का स्मरण करता है, उसके संकट कट जाते हैं और सारी पीड़ा मिट जाती है।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 37
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
अर्थ: हे स्वामी (गोसाई) हनुमान जी, आपकी जय हो, जय हो, जय हो। आप मुझ पर गुरुदेव की तरह कृपा कीजिए।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 38
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
अर्थ: जो कोई इसका सौ (सत) बार पाठ करता है, वह बंधन से छूट जाता है और उसे महान सुख मिलता है।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 39
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
अर्थ: जो यह हनुमान चालीसा पढ़ता है, उसे सिद्धि मिलती है; इसके साक्षी गौरीश (भगवान शिव) हैं।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, चौपाई 40
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥
अर्थ: तुलसीदास सदा हरि (श्रीराम) के सेवक हैं। हे नाथ, मेरे हृदय में निवास कीजिए।
hanumanchalisapdf.in


हनुमान चालीसा, अंतिम दोहा
पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥
अर्थ: हे पवनपुत्र, आप संकट हरने वाले और मंगल की मूर्ति हैं। हे देवताओं के राजा, आप श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी के साथ मेरे हृदय में निवास कीजिए।
hanumanchalisapdf.in